



सुन्नी कृहज़



सरकारे

गौरें आजम

تعالى الله عنّه
رضي الله عنه

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहुटाइची

ग़ाज़ी किताब घर

गंगवल बाजार बहुटाइच (युपी)

786/92

सुन्नी कुइज

सरकारे गौसे आजम

टजियत्ताहु तआला अनहु

मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची

-:नाशिर:-

गाजी किताब घर

गंगवल बाज़ार ज़िला बहराइच शरीफ, यू.पी. (इंडिया)

जुमलह हुक्क व-हुक्के नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : सुन्नी कुइज़ सरकारे गौसे आजम
 लेखक : मौलाना सिराजुल-कादिरी बहराइची
 सने इशाअत : १४३७ हि./ २०१५ ई.

Publisher : Ghazi Kitab ghar,
 Gangwal Bazar, Bahraich, U.P.
 Mobile : 9870742302

मिलने के पते:-

- ★ मकतबा तय्यबा, इसमाईल हबीब मस्जिद, मुम्बई
- ★ न्यू सिलवर बुक एजंसी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ★ नाज़ बुक डीपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ★ इकरा बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ★ बुक सिटी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ★ उसमानियह कुतुबखाना, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ★ कुतुबखाना अमजदिया, देहली
- ★ मकतबा इमामे आजम, देहली
- ★ ख़्वाजा बुक डीपो, देहली
- ★ शरीफी किताब घर, चेम्बूर
- ★ दीनी किताब घर, दरगाह शरीफ, बहराइच
- ★ गाज़ी बुक डीपो, दरगाह रोड, बहराइच शरीफ, यू. पी.
- ★ ताजुश्शारीअह किताब घर, औरंगाबाद
- ★ मनसूर अली बुक सेलर, दरगाह शरीफ, बहराइच
- ★ जामिया वज़ीखल उलूम गंगवल बाज़ार, ज़िला बहराइच शरीफ, यू. पी.
- ★ मकतबा अल-हबीबिया, बग्धी रोड, गोन्डा
- ★ हाफिज़े मिल्लत किताब घर, बलरामपुर
- ★ शकूर सालार बुकसेलर, बलरामपुर
- ★ मकबतुल-मुस्तफा, बरेली शरीफ

सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाह अनहु

- सवाल: हज़रत गौसुल आज़म दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे ग्रामी का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: हज़रत सय्यदुना मूसा अबू सालेह जंगी दोस्त रहमतुल्लाह अलैह। (बहुजतुल असरार, सफह २६२, हयाते तय्यबा सफह ७)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के नाना का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रहमतुल्लाह अलैह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की वालेदह माजेदह का इस्मे ग्रामी क्या था?
- जवाब: हज़रत फ़ातेमा सानी उम्मुल ख़ैर रहमहुल्लाह तआला अलैहा। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की हयाते पाक में बग़दाद के ख़लीफ़ा कौन लोग हुये?
- जवाब: अल-कादिर बिल्लाह अबुल आस, अल-काइम बिअमरिल्लाह अबू जअफ़र अब्बासी।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का अस्ल नाम बताइये?
- जवाब: सय्यदुना शैख़ अब्दुल कादिर मुहम्मदीन जीलानी रहमतुल्लाह अलैह। (बहुजतुल असरार, सफह २६८, हयाते तय्यबा सफह ७).
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के वालिद माजिद का अस्ल नाम क्या था?
- जवाब: हज़रत मूसा रहमतुल्लाह अलैह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे ग्रामी की कुन्नियत क्या थी?
- जवाब: अबू सालेह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की विलादत कब हुई?
- जवाब: यकुम रमज़ानुल मुबारक बरोज़ जुमअ ४७० हिजरी को। (ऐज़न)
- सवाल: उस अज़ीम हस्ती का इस्मे ग्रामी बताइये जिन्हों ने बिस्मिल्लाह ख़वानी के मौका पर उस्ताद को मुकम्मल १७ पारे सुना दिये?
- जवाब: शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह का रौज़ा कहाँ वाके है?

- जवाब: बगदाद शरीफ (इराक) में।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह किस लक्ष्य से मशहूर हैं?
- जवाब: गौसुल आजम, पीराने पीर, मुहय्युदीन, महबूब सुबहानी, बड़े पीर दस्तगीर रोशन ज़मीर वग़ेरह से। (ऐज़न)
- सवाल: फुतूहुल कुलूब, गुनिय्यतुत्तालिवीन किस की तसरीफ है?
- जवाब: हुजूर गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की फिक्ह में ज्यादह तर्जुमानी किस इमाम की जानिव थी?
- जवाब: हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह की तरफ, आप मसलके हंबली के मुकल्लिद थे।
- सवाल: ४० साल तक मुतवातिर इशा के बजू से फ़ज़र की नमाज़ किस ने अदा की?
- जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने।
- सवाल: सरकार गौसे आजम रहमतुल्लाह अलैह के पीर व मुर्शिद का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: आरिफ़े बिल्लाह शैख अबू सईद मख़जूमी रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की औलाद की तअदाद बताइये?
- जवाब: बअज़ ने ४६ बताया है २७ साहेबज़ादे और २२ साहेबज़ादियाँ और बअज़ ने ६ बताया है और एक साहेबज़ादी।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के बड़े साहेबज़ादे का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: सय्यदुना शैख अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: मेरा क़दम तमाम औलिया की गर्दनों पर है, यह कौल किस बुजुर्ग हस्ती का है?
- जवाब: सय्यदुना सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का।
जिस की मिंबर बनी गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने बसरह की बारह (१२) बरस की छूबी हुई बारात दरया से निकाली थी, बताइये दूल्हा का नाम क्या था?
- जवाब: सय्यद कबीरुदीन दरयाई दूल्हा और अब शाह दूल्हा कहा जाता है।

आप की कब्र मगरिबी पाकिस्तान में है उपर तकरीबन ६ सौ बरस हुई गौस पाक के ख़लीफ़ हे।

- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की विलादत कहाँ हुई?
- जवाब: तबरिस्तान के शहर जीलान के कसबा नीफ में।
- सवाल: वह कौन से बुजुर्ग हैं जिन के हुक्म से कुमरी ने बोलना और कबूतरी ने अंडे देना शुरू कर दिया था?
- जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तारीखे विसाल बताइये?
- जवाब: १७ रबीउल आखिरा जबकि मशहूर और जमहूर के मुताबिक १९ रबीउल आखिर ५६९ हिजरी है।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के कुते ने किस बुजुर्ग के शेर को फ़ाड़ डाला था?
- जवाब: हज़रत सय्यदुना शैख़ अहमद जाम रहमतुल्लाह अलैह के क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा शेर को ख़ातरे में लाता नमहीं कुत्ता तेरा
- सवाल: एक वक्त में ७० मुरीदों के यहाँ इफ्तार में मौजूद रहना किस बुजुर्ग हस्ती की मशहूर करामत है?
- जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की।
- सवाल: क्या गौस का हर ज़माना में मौजूद होना ज़रूरी है?
- जवाब: जी हाँ? बगैर गौस के आसमान व ज़मीन कायम नहीं रह सकते।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अपना ख़िरका शरीफ़ किस को अता फ़रमाया था?
- जवाब: हज़रत मुज़दिदे अलिफे सानी रहमतुल्लाह अलैह को।
- सवाल: लक़ब ज़ंगी दोस्त से कौन मुराद है?
- जवाब: सरकार गौसे पाक के वालिद सय्यदुना अबू सॉलेह रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: सरकार गौसुल आज़म दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह ने पादरी के कहने पर मुर्दह ज़िन्दह फ़रमाया था, बताइये उस का असर क्या हुवा था?
- जवाब: पादरी के साथ सारी कुरदिस्तानी कौम जो कई लाख की तअदाद में थी मुसलमान हो गई थी।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने कुरदिस्तानी पादरी के कहने पर जिस मुर्दह को ज़िन्दह फ़रमाया था उस ने अपने बारे में आप से

क्या बताया?

जवाब: मैं हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम के वक्त का हूँ और उन्हीं के मज़हब पर मुझे मौत आई।

सवाल: हज़रत गौसे आजम के भाई के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप के एक हकीकी भाई थे। जिन का इस्मे ग्रामी अबू अहमद अब्दुल्लाह था, यह आप से उम्र में छोटे थे। और वालेदह मुहतरमा की खिदमते रहमत ही में रहे और जीलान के उलमा से इल्म हासिल किया और जवानी के अच्छाम में ही अपने वतन जीलान में विसाल फरमाया। (बहुजतुल असरार, सफह २६२, हयाते तथ्यबा, सफह ११)

सवाल: सरकार गौसे पाक के वालेदैन के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वालिदे ग्रामी हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा ज़ंगी दोस्त रज़ियल्लाहु तआला अनहु वलीए कामिल बुजुर्ग थे। एक दिन रमज़ान शरीफ के महीना में आप कहीं तशरीफ ले जा रहे थे, रास्ते में दरयाए दजला पार करना पड़ा। उस में से एक सेब बहता हुवा जब आप के करीब आया तो आप ने उस सेब को उठा लिया और उसी से रोज़ह इफ्तार किया। खाने के बाद ख़याल आया खुदा जाने यह सेब किस का था और कैसे नदी में बह गया और हम ने मालिक की इजाज़त के बगैर कैसे खा लिया। बगैर इजाज़त के खा लेना आप को तकवा के खिलाफ महसूस हुवा और ख़याल आया कि कहीं ऐसा न हो कि क्यामत के दिन यह सेब अज़ाब का सबब बन जाये और हम खुदा की बारगाह में गिरिफ्तार हो जाएँ। यह सोच कर आप वहाँ से उठे और अपना कुसूर मआफ़ कराने के लिये सेब की मालिक की तलाश में दरया के किनारे किनारे चल दिये। काफी देर तक चलने के बाद एक अज़ीमुश्शान बाग़ नज़र आया जिस की कुछ शाख़ें फलों से लदी हुई पानी की सतेह पर झुकी हुई थीं और हवा के झोंकों से पके हुये फल टूट टूट कर पानी में गिर रहे थे, आप को यकीन हो गया कि जो फल मैं ने खाया है वह उसी बाग़ का था।

फिर आप ने उस बाग़ के मालिक की जुस्तुजू की तो मालूम हुवा कि उस बाग़ के एक खुदा रसीदह बुजुर्ग हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई हैं, आप उन की खिदमते बावरकत में हाज़िर हुये। हज़रत सय्यद

अब्दुल्लाह सुमई रजियल्लाहु तआला अनहु ने अल्लाह तआला की दी हुई ताकते ख्वानी कश्फ से जान लिया कि यह जवान बच्चा जवाने सालेह है। फरमाया ऐ जवाने सालेह इस ग़लती को मआफ जब करूँगा कि तुझे दस साल तक मेरे बाग की देख भाल करना होगी। हज़रत अबू सालेह मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु हुक्म पाते ही बाग की खिदमत में मशगूल हो गये। जब दस साल का तबील अरसा गुज़र गया तो एक दिन हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई रजियल्लाहु तआला अनहु ने हज़रत अबू सालेह मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु को बुला कर फरमाया कि अभी एक शर्त और बाकी है उसे भी अंजाम देना होग फिर मआफी होगी। वह शर्त यह है कि मेरी एक लड़की है जिस में पाँच ऐब हैं। पहला ऐब वह अंधी है। दूसरा ऐब वह बहरी है। तीसरा ऐब वह ग़ूँगी है। चौथा ऐब वह लुंजी है। पाँचवाँ ऐब वह लंगड़ी है। उस से आप को निकाह करना होगा। हज़रत अबू सालेह मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु यह सुन कर सोच में पड़ गये। एक तरफ सेव की मआफी का सवाल था और दूसरी तरफ ऐसी औरत से निकाह करना जो अपाहिज है। सारी ज़िन्दगी का मसला था। आखिर ऐसी औरत के साथ सारी ज़िन्दगी कैसे कटेगी। इस तस्वुर ने अज़ हद परेशान कर दिया, उन के ज़ेहन में ख़्यालात हुजूम बन कर आये आखिर फैसला किया कि ज़िन्दगी फ़ानी है, जवानी भी चन्द दिन की मेहमान है। हज़रत शैख अबू सालेह मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु ने कहा मुझे मंजूर है, मैं आप की अपाहिज बेटी के साथ निकाह करने को तैयार हूँ।

यह सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रजियल्लाहु तआला अनहु ने सेव की ग़लती को मआफ कर दिया। निकाह हो गया। जब हज़रत अबू सालेह मूसा रजियल्लाहु तआला अनहु अपनी बीवी के पास गये तो देखा उस के तमाम आज़ा दुरुस्त हैं। एक निहायत ख़ूबसूरत तनदुरुस्त लड़की वैठी है, उस हुस्नो जमाल के पैकर को देख कर ख़्याल किया शायद कोई और लड़की है, जल्दी से बाहर निकल आये। हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई रजियल्लाहु तआला अनहु से मुलाक़ात हुई और कहा यह तो कोई और औरत है इस में तो कोई ऐब ही नहीं और अपने हुरन व जमाल में बेमिसाल है। हज़रत

अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया ऐ जवान सालेह यही तेरी बीवी है। मैं ने अपनी बच्ची के जो औसाफ़ बयान किये थे उस का मतलब यह था। वह अंधी है यानी उस ने कभी नामहरम को नहीं देखा। वह गूँगी है यानी कभी उस ने बद-कलामी नहीं की। वह लेंगड़ी है यानी कभी उस ने अपने कदम को बुरे रास्ते पर नहीं रखा। यह हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु की साहेबज़ादी थीं जिन का निकाह हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु से हुवा जो वलीए कामिल की बेटी थीं और वलीए कामिल की बीवी बनीं और फिर उन्हीं पाक तीनत ख़ातून हज़रत उम्मुल ख़ैर फ़ातेमा सानी रज़ियल्लाहु तआला अनहा के शिकमे पाक से सरकार गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु पैदा हुये और उस मुकद्दस माँ को सरदारे औलिया, बड़े पीर, हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु को दूध पिलाने और गोद में लेने का शर्फ़ हासिल हुवा। (बहुजतुल असरार, सफ़ह २६२, हयाते तय्यबा, सफ़ह ७) ब-हवाला अनवारुल बयान।

• सवाल: गौसे आज़म के मुरीदों को कौन सी बशारत है?

जवाब: हज़रत सुहैल इब्ने अब्दुल्लाह तुसतरी रज़ियल्लाहु तआला अनहु से मनकूल है कि एक दिन सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु बग़दाद वालों की नज़र से ग़ायब हो गये। लोगों ने तलाश किया दरयाए दजला के किनारे पाया तो क्या देखा कि मछलियाँ ब-कसरत आप की ख़िदमत में आती हैं और दस्ते मुबारक का बोसा देती हैं। उसी असना में ज़ोहर का वक्त हो गया, एक मुसल्ला हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख्त की तरह हवा में मुअल्लक हो कर बिछ गया और उस मुसल्ला के ऊपर दो सतरें लिखी थीं पहली सतर में “अला इन्ना औलियाअल्लाहि ला ख़ौफुन अलैहिम वला हुम यहज़नून”

(पारह ११, रुकू १२)

लिखा हुवा था और बहुत से नूरानी शक्ल के लोग आये और मुसल्ला पर सफ़ में खड़े हो गये और सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु मुसल्ला पर आगे तशरीफ ले गये और नमाज़ पढ़ाई उस वक्त अजीब व ग़रीब समाँ था जब हुजूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु तसबीह पढ़ते तो सातों आसमान के फ़रिश्ते भी आप

के साथ तसबीह पढ़ते। गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दोनों हाथों को दुआ के लिये बारगाहे रब्बुल आलमीन में उठा कर अर्ज किया, ऐ अल्लाह तआला! मैं तेरी बारगाहे बेनियाज़ी में तेरे प्यारे महबूब हज़रत मोहम्मद मुरतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से तालिब हूँ और दुआ करता हूँ कि तू मेरे मुरीदों को और मुरीदों के मुरीदों को सुबहे क्यामत तक मौत न दे मगर ईमान पर। यानी मेरे मुरीदों का ईमान पर ख़ातेमा नसीब फरमा। हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि हम ने आप की मुबारक दुआ पर फरिश्तों के एक बहुत बड़े गिरोह को आमीन कहते हुये सुना और जब सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु दुआ पूरी कर चुके तो हम ने गैब से एक निदा सुनी कि ऐ अब्दुल कादिर जीलानी! मेरे महबूब सुबहानी, तुम को बशारत हो, खुशखबरी हो कि हम ने आप की दुआ कुबूल फरमा ली। (तलखीस बहुजतुल असरार, सफ्ह २६१)

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निसबत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग है नहीं मारे जाते
हश्श तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
(ब-हवाला अनवारुल बयान)

सवाल: नेक मेरे लिये और मैं गुनहगारों के लिये हूँ किस का फरमान है?

जवाब: सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु का।

शैख बुका बिन बतूर रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि एक शख्स ने हुजूर सरकारे गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु से दरयापृत किया कि हुजूर आप के मुरीदों में परहेज़गार भी होंगे और गुनहगार भी। तो सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने इरशाद फरमाया कि परहेज़गार नेको कार मेरे लिये हैं और मैं गुनहगारों के लिये हूँ। (तलखीस बहुजतुल असरार, सफ्ह २६४)

ब-हवाला अनवारुल बयान

सवाल: सरकार गौसे पाक की बचपन के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: तमाम बुजुर्गने दीन का इत्तिफ़ाक है कि आप मादरज़ाद वली हैं।

चुनाँचे विलादत के बाद ही आप की यह करामत ज़ाहिर हुई कि आप रमज़ान में तुलूए फज्ज से गुस्लबे आफताब तक कभी दूध नहीं पीते थे यानी रमज़ान शरीफ के पूरे महीने आप रोज़ह रखते थे और जब इफतार का वक्त होता मग़रिब की अज़ान होती तो आप दूध पीने लगते, यह करामत इस कद्र मशहूर हुई कि जीलान के हर तरफ यह शोहरा और चर्चा था कि सादात के घराने में एक ऐसा बच्चा पैदा हुवा है जो रमज़ान मुबारक में दिन भर दूध नहीं पीता। (कलाइदुल जवाहिर, सफ्ह ३)

सवाल: सरकार गौसे पाक एक गैबी आवाज़ सुना करते थे उस के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हमारे बड़े पीर, हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु बचपन ही से लहू व लइब से मुतनफ़िकर और दूर रहे। आप ने खुद अपने बचपन के हालात बयान फ़रमाते हुये इरशाद फ़रमाया कि जब कभी मैं बच्चों के साथ खेलने का इरादह करता तो एक गैबी आवाज़ मैं सुनता था कि कोई कहने वाला मुझ से कहता है कि ऐ बरकत वाले बच्चे! मेरी तरफ आ जा। (बहुजतुल असरार, सफ्ह ५०)

सवाल: सरकार गौसे पाक अपनी विलादत का इल्म होने के तअल्लुक से क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: आप ने फ़रमाया कि दस बरस की उम्र में जब मैं मकतब में पढ़ने के लिये जाता था तो रास्ते में मेरे पीछे पीछे फ़रिश्ते चलते नज़र आते थे फिर जब मैं मकतब में पहुंचता तो उन को यह कहते हुये सुनता कि इफ़सहू लिवलिय्लाहि यानी अल्लाह के बली के लिये बैठने की जगह दो और यह आवाज़ तमाम मकतब वाले सुनते थे। (बहुजतुल असरार, सफ्ह २५५, खुलासतुल मफ़ाखिर)

सवाल: सरकार गौसे आज़म से एक बैल ने कलाम किया इस तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप फ़रमाते हैं कि मैं एक शहर के बाहर सैर व तफ़रीह के लिये जा रहा था रास्ते में एक बैल मिला उस ने मेरी तरफ मुँह कर देखा और ब-ज़बाने फ़सीह कलाम किया। ऐ अब्दुल कादिर! न तो तुम इस घूमने फिरने के लिये पैदा किये गये और न इस बात का तुम्हें हुक्म दिया गया। आप फ़रमाते हैं कि एक बेज़बान जानवर बैल से यह नसीहत

सुन कर मेरे कल्ब में मोहब्बते इलाही का जज़्बा मोजेज़न हो गया और मैं घर वापस आ गया। (बहजतुल असरार, सफ़ह २५५, खुलासतुल मफ़ाखिर)

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के बग़दाद के सफ़र का वाकिअह बयान कीजिये?

जवाब: आप ने अद्वारह साल की उम्र में वालिदह माजिदह से इजाज़त लेकर इस्मे दीन के हुसूल के लिये जीलान से एक काफिला के साथ बग़दाद शरीफ का सफ़र फरमाया जो तकरीबन चार सौ मील का सफ़र है। जब काफिला हमदान से आगे बढ़ा तो डाकुओं ने हमला कर के सारा माल व असबाब लूट लिया। हमारे बड़े पीर हुज़ूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक तरफ खड़े हैं और सारा माजरा देख रहे हैं, एक डाकू आप के पास आया और दरयाप्त किया कि ऐ साहेबज़ादे! बताओ तुम्हारे पास क्या है? आप ने फरमाया मेरे पास ४० दीनार हैं। डाकू आप की बात को मज़ाक समझ कर चला गया। फिर दूसरा डाकू आया उस ने भी वही सवाल किया और आप ने उसे भी वही जवाब दिया। उस ने भी आप की बात को मज़ाक समझा और चला गया। जब यह दोनों डाकू सरदार से मिले और सारा वाकिअह बयान किया तो सरदार ने कहा कि उस लड़के को हमारे पास लाओ। हुज़ूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु डाकुओं के सरदार के पास लाये गये, डाकुओं के सरदार ने दरयाप्त किया, साहेबज़ादे! सच बताओ कि तुम्हारे पास क्या है? आप ने फरमाया कि मेरे पास ४० दीनार हैं। सरदार ने पूछा: कहाँ हैं? आप ने फरमाया मेरी गुदड़ी के बग़ल में सिले हुये हैं। सरदार ने हुक्म दिया कि गुदड़ी चाक की जाये। आप की गुदड़ी मुबारक चाक की गई तो उस में से ४० दीनार निकले। डाकू और उन का सरदार आप की सदाकत को देख कर हैरान रह गये। सरदार बोला कि लड़के तुम अच्छी तरह जानते हो कि हम लोग रहज़न हैं, तुम्हारे पास यह दीनार तो बहुत अच्छी तरह पोशीदह और महफूज़ थे लेकिन तुम ने क्यों बता दिया और उसे ज़ाहिर कर दिया। आप ने मुस्कुरा कर फरमाया, क्या मैं झूठ बोलता, तुम ने पूछा और मैं ने सच सच बता दिया। क्यों कि मेरी वालिदह माजिदह ने चलते वक़्त मुझ से यह अहेद लिया था कि बेटा कैसा भी

वक्त आये, कैसी भी हालत आये मगर कभी झूठ न बोलना, हर हालत में सच बोलना, अब क्या मैं आप लोगों से डर कर और ४० दीनार के लिये अपनी माँ से किये हुये अहेद व पैमान को तोड़ दूँ। अपनी माँ की नसीहत को भूल जाऊँ और अपनी प्यारी माँ को नाराज़ करूँ। ऐ सरदार सुन लो दीनार तो दे सकता हूँ मगर माँ की बात नहीं। खुद तो लुट सकता हूँ मगर माँ की वसिष्यत व नसीहत को नहीं लुटा सकता, माँ का हुक्म था हर हाल में सच बोलना इस लिये मैं ने सच मुच सब कुछ बता दिया।

गौसे आजम इमामुत्तका वन्नुका

जलवए शाने कुदरत पे लाखों सलाम

हमारे बड़े पीर हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु की इस प्यारी और सच्ची बात का सरदार पर ऐसा असर हुवा कि आँखों से आँसू जारी हो गये और बोला आह! तुम अपनी माँ का अहद व पैमान नहीं तोड़ सकते और हम हरदम खुदाए तआला का अहेद तोड़ रहे हैं। यह कहते हुये डाकुओं का सरदार आप के कदमे मुबारक पर गिर गया, सिदक दिल से तौबा कर ली, डाकुओं ने अपने सरदार को तौबा करते हुये देखा तो कहने लगे कि जब तुम रहज़नी में हमारे सरदार थे तो अब तौबा में भी हमारे सरदार हो। तमाम डाकुओं ने भी तौबा कर के काफिले वालों को लूटा हुवा माल वापस कर दिया और अब इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गये और अपने दौर के बेहतरीन सॉलेहीन बन गये। हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु फरमाया करते थे। हुम अब्लु मन ताबा अला यदी। यानी सब से पहले मेरे हाथ पर तौबा करने वाले वही लोग थे। (बहजतुल असरार, सफह २५६, कलाइदुल जवाहर, सफह ६)

सवाल: सरकार गौसे पाक के मुजाहिदह के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी से फरागत के बाद रियाज़त व मुजाहिदह में मशगूल हो गये और बड़े बड़े मुजाहिदे किये, सालहा साल मदाइन और ऐवाने किसरा के खंडरात में चिल्ले और मुराक्बे करते रहे, कई महीनों तक सिर्फ गिरी पड़ी मवाह चीज़ें खा लेते और पानी नहीं पीते, कभी तो सिर्फ पानी

पी कर महीनों तक कुछ नहीं खाते, वीरानों और जंगलों में भूके प्यासे गश्त करते रहते और कभी कभी ४०-४० दिनों तक बे आबो दाना मुसलसल इबादत व रियाज़त में मशगूल रह कर ख़वाहिशाते नफसानिया से जिहाद फरमाते थे। (बहजतुल असरार, सफह २४६, क़लाइदुल जवाहिर, सफह २५६)

सवाल: एक मर्तबा शैतान ने सरकार गौस पाक को फरेब देना चाहा इस तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप के फरज़न्द शैख़ मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु का व्यान है कि आप ने अपनी सयाहत के दौरान एक मर्तबा किसी ऐसे जंगल में चले गये जहाँ पानी का नामो निशान तक न था, कई दिन आप पर प्यास का सख्त ग़लबा रहा अचानक एक दिन आप के सरे मुबारक पर बादल का टुकड़ा आ गया और बारिश होने लगी जिस से आप ख़ूब सैराब हो गये फिर उस बादल से एक रौशनी ज़ाहिर हुई जो हद्दे नज़र तक फैल गई और उस रौशनी में एक सूरत ज़ाहिर हुई उस ने पुकार कर कहा ऐ अब्दुल क़ादिर! मैं तुम्हारा रब हूँ मैं ने तुम पर तमाम हराम चीज़ों को हलाल कर दिया। यह आवाज़ सुन कर मेरे आका हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने अज़ज्ञु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्जीम पढ़ा और फरमाया ऐ मरदूद तू दूर हो जा वह रौशनी ग़ायब हो गई और वह सूरत धुएँ की तरह फैल गई, फिर उस से आवाज़ आई ऐ अब्दुल क़ादिर! आज तुम अपने इत्म की बदौलत मेरे फरेब से बच गये वर्ना इस के पहले इसी मैदान में ७० औलियाए तरीक़त को मैं गुमराह कर के उन की विलायत को ग़ारत व बरबाद कर चुका हूँ। हुजूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया ऐ शैतान! मेरा इत्म भला क्या बचा सकता है, जब तेरा इत्म तुझ को नहीं बचा सका। ऐ शैतान मरदूद ख़ूब गौर से सुन ले, मेरे इत्म ने नहीं बल्कि मेरे रब के फ़ज़्ल व करम ने मुझे तेरे शर से बचा लिया। (क़लाइदुल जवाहिर, सफह २०)

सवाल: सरकार गौसे पाक के कदमे मुबारका के बारे में आला हज़रत बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु क्या फरमाते हैं?

जवाबः वाह क्या मर्तबा ऐ गौस है बाला तेरा
ऊँचे-ऊँचे के सरों से कदम आला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

सवालः कृदमी हाजिही अला रक्बति कुल्लि वलियुल्लाह

यानी मेरा कदम हर वली के गर्दन पर है, सरकार गौसे पाक के
ज़बाने मुबारक से यह एलान सुन कर कितने लोगों ने गर्दन झुका ली?

जवाबः उस वक्त ३१३ औलियाए केराम आप की मजलिस में हाज़िर थे सब
के सब ने अपना अपना सर झुका कर अर्ज किया कि ऐ सरकार
गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु आप का क़दमे मुबारक हमारी
गर्दनों पर ही नहीं बल्कि आप का क़दम शरीफ़ तो हमारे सरों और
हमारी आँखों पर है। और उन तमाम बुजुर्गों ने देखा कि तमाम स्वए
ज़मीन के औलियाए केराम आप के हुक्म पर अपनी अपनी गर्दनें
झुकाये खड़े हैं और सरकार गौस पाक के क़ल्बे मुबारक पर अल्लाह
तआला के अनवार व तजल्लियात की बारिश हो रही थी और मदीने
वाले आका रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अता
किया हुवा खिलअते करामत औलियाए केराम के इज़दहाम में फरिश्ते
आप को पहना रहे हैं। (बहतजुल असरार, सफ़ह १७)

सवालः हज़रत शैख़ मकारिम अलैहिरहमह क्या फ़रमाते हैं?

जवाबः औलियाए केराम ने देखा कि कुतबिय्यत का झंडा आप के सामने गाड़ा
गया और गौसियत का ताज आप के सरे मुबारक पर रखा गया जिस
को सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने खुद इरशाद
फ़रमाया।

कसानी खिलअतन बितराजि अज़मी
व तव्वजनी बितीजानित कमाली

यानी मेरे रब ने मुझे उलुल अज़मी और बुलंद हिम्मती कि खिलअत
पहनाई और फ़ज़्लो कमाल का ताज मेरे सर पर रख दिया।

तुबूली फिस्समाई वल अर्जु दुक्कतु
व शाऊसुस्सआदति क़द बदाली

यानी ज़मीनो आसमान में मेरी शान के नक़्कारे बजते हैं और नेक
बख़्ती के नक़ीब मेरे स्वरूप हाज़िर होते हैं।

अनल जीलिय्यु मुहिय्युद्दीनु इस्मी

व अग्रलामि अला रासिल जिबाली

यानी मैं जीलान का रहने वाला हूँ और मेरा नाम मुहिय्युद्दीन है और मेरे इकबाल के झांडे पहाड़ों की चोटियों पर लहरा रहे हैं।

(कसीदह गौसिया शरीफ)

सवाल: आरिफों के सरदार हज़रत मोहम्मद काकीस की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत मोहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अनहु जो इराक के सय्यदुल मशाइख और अमीरे औलिया हैं, जिन के मुरीदों में १७ बादशाह भी थे, और आप के नीचे बाअदब चला करते थे। हज़रत शैख अज़ाज़ रहतुल्लाह अलैह बयान करते हैं कि मैं ख़बाब में हुजूर सरकारे मदीनह मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदारे पुर बहार से मुशर्रफ हुवा तो मैं ने अपने प्यारे नबी, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे रहमत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप हज़रत मोहम्मद काकीस के बारे में क्या इरशाद फरमाते हैं तो हुजूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स के बारे में मुझ से क्या पूछते हो, वह तो उन लोगों में से है जिन के सबब से मैं क़्यामत के दिन फ़ख़ करूँगा कि ऐसे ऐसे साहिबे कमाल मेरी उम्मत में हैं। हज़रत मोहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अनहु १२ रजबुल मुरज्जब ४९७ हिजरी में पैदा हुये और २० रबीउल अव्वल ५०९ हिजरी को बग़दाद शरीफ के क़रीबी शहर क़लमीनिया में वफ़ात पाई।

(क़लाइदुल जवाहिर, सफह १८)

सवाल: शैख अली बिन हेती की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: शैख अली बिन हेती रज़ियल्लाहु तआला अनहु बग़दाद के उन चार बुजुर्गों में से हैं जो मुर्दह को ज़िन्दह फरमा देते थे, एक दिन सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ की मजलिस में हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अनहु हाज़िर थे नागहाँ उन पर नींद का ग़लबा हो गया, तो सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपने वअज़ के मिम्बर से उतर कर उन के पास

बा-अदब खड़े हो गये जब हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अनहु बेदार हुये तो अर्ज किया कि ऐ सारकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु मुझ को अभी ख़्वाब में मुहतरम व मुकर्रम रसूले आज़म प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार हुवा है तो हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया इसी लिये तो मैं मिंबर से उतर कर अदब व एहतराम से आप के पास खड़ा हो गया था कि आप को ख़्वाब में दीदार नसीब हुवा और मैं सर की आँखों से प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदारे पुरबहार से सरफ़राज़ हुवा।

(बहजतुल असरार)

सवाल: हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अनहु की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत इब्ने मुहम्मदीन अरबली रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने मुकाशिफ़ए जुनेदिया के हवाले से बयान किया है कि सय्यदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक रोज़ मिंबर पर जलवह अफ़रोज़ हो कर खुतबा दे रहे थे कि आप के क़ल्बे मुबारक पर तजल्लियाते रब्बानी का वर्सद हुवा और आप बहरे मुकाशिफ़ा में मुस्तग़रक़ हो गये और फ़रमाया। मेरी गर्दन पर उन का क़दम बगैर किसी इंकार के है। और मिंबर की एक सीढ़ी उतर आये, नमाज़े जुमज़ से फ़ारिग़ होने के बाद लोगों ने उन कलेमात के मुतअल्लिक़ आप से दरयाप़त किया, आप ने फ़रमाया कि हालते कश्फ़ में मुझे मालूम हुवा कि पाँचवीं सदी हिजरी के वस्त में हुजूर सय्यदे आलम, रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की औलादे पाक में से एक बुजुर्ग कुतुबे आलम होगा जिस का लक़ब मुहम्मदीन और नाम अब्दुल क़ादिर होगा और वह अल्लाह तआला के हुक्म से कहेगा “मेरा क़दम हर दली की गर्दन पर है” तो मेरे क़ल्ब में ख़्याल आया कि हम उन के ज़माने में नहीं हैं इस लिये उन का क़दम हम अपनी गर्दन पर क्यों लें। इस ख़्याल का आना था कि अल्लाह तआला को नाराज़ और कहरो ग़ज़ब में देखा तो फ़ौरन मैं ने अपनी गर्दन झुका दी और वह कहा जो तुम लोगों ने सुना। (तफ़रीहुल ख़्वातिर फ़ी मनाकिबे शैख़ अब्दुल क़ादिर, तरगीबुन्नाज़िर, ब-हवाला हयाते तय्यबा, सफ़ह ۹۵)

सवाल: मेरा हाथ मेरे मुरीदों पर हमेशा है, इस के मुत्अलिक रोशनी डालिये?

जवाब: हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि रब तबारक व तआला की इज़्जत व जलाल की क़सम! यदी अल्ला मुरीदी क़त्समाई अल्ल अर्जी, यानी मेरा दस्ते हिदायत मेरे तमाम मुरीदों पर ऐसा है जैसे आसमान का साया ज़मीन परा और ऐ दुनया वालो सुन लो! मेरा मुरीद अच्छा नहीं मगर मैं तो अच्छा हूँ, मेरा मुरीद ताक़त व कुब्वत वाला नहीं मगर मैं तो ताक़त व कुब्वत वाला हूँ और मैं क़यासत तक अपने मुरीदों की दस्तगीरी करता रहूँगा। अल्लाह तआला की इज़्जत व जलाल की क़सम जब तक मेरे तमाम मुरीद जन्नत में नहीं जाएँगे मैं बारगाहे खुदावंदी में नहीं जाऊँगा। (खुलासा क़सीदए गौसिया शरीफ, खुलासा बहजतुल असरार, सफ़्ह २६४)

सवाल: मुस्तफ़ा करीम और मुर्तज़ा की ज़ियारत के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हज़रत शैख अब्दुल रज़ाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया कि मैं १६ शब्वालुल मुकर्रम ५२९ हिजरी को मंगल के दिन दोपहर के बक़्त नाना जान मोहम्मद मुस्तफ़ा سल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा तो प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बेटे अब्दुल क़ादिर! तुम वअज़ क्यों नहीं करते? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मैं अजमी हूँ फुसहाए बग़दाद के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बेटा अब्दुल क़ादिर अपना मुंह खोलो! जब मैं ने अपना मुंह खोला तो हुजूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सात मर्तबा लुआवे दहेन शरीफ़ मेरे मुंह में डाला और फ़रमाया कि तुम हिक्मत और बेहतरीन नसीहत के साथ लोगों को खुदाए तआला के रास्ता की तरफ़ दावत दो। फिर उस के बाद दादा जान हज़रत मौला अली कर्मल्लाहु वजहहूँ की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुवा तो उन्होंने छः मर्तबा अपना लुआवे दहेन मुझे अता फ़रमाया, मैं ने अर्ज़ किया छः ही मर्तबा क्यों? आप ने भी सात मर्तबा क्यों नहीं अपना लुआवे दहेन अता फ़रमाया? तो इरशाद फ़रमाया कि मैं ने

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अदब के लिये छः ही मर्तवा अपना लुआबे दहेन तुम्हें बख्शा है ताकि जाने आलम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ बराबरी का शुब्हा न पैदा हो सके। (कलाइदुल जवाहिर, सफ्ह १३, शैख़ अब्दुल हक जुबदतुल आसार, सफ्ह ६५, हयाते तय्यबा, सफ्ह ४३)

- सवाल:** हज़रत गौस पाक के वअज़ में कितने सामईन होते थे?
- जवाब:** शैख़ अब्दुल्लाह हयाई रहमतुल्लाह तआला अलैह फ़रमाते हैं लोग घोड़ों, ख़च्चरों, ऊँटों और सवारी की गधों पर सवार होकर आते थे और खड़े रहते थे जबकि मजलिस हिसार की तरह गोल हो जाती थी और मजलिस में तक़रीबन ७० हज़ार सामईन हाज़िर रहते थे। (बहजतुल असरार, सफ्ह २७०, खुलासतुल मफ़ाखिर, कलाइदुल जवाहिर, सफ्ह १३, शैख़ अब्दुल हक, जुबदतुल आसार, सफ्ह ६५)
- सवाल:** सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ का असर किस तरह होता था?
- जवाब:** हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ मुबारक का यह असर था कि सैकड़ों गुनहगार व बदकार आप के दस्ते मुबारक पर तौबा करते और फुस्ताक व फुज्जार ताइब होकर परहेज़गार व नेको कार बन जाते और तक़रीर की तासीर से मजलिस पर वज्द की कैफ़ियत तारी होती, कोई माहिए बेआब की तरह तड़पता तो कोई बे इखितयार हो कर कपड़े फाड़ता और चीखता चिल्लाता और किसी के दिल पर ऐसी चोट लगती कि शमशीरे मोहब्बत से घायल होकर मौत की नींद सो जाता, जब वअज़ ख़त्म होता तो कितने जनाज़े उठाये जाते। गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ में मुसलमानों के अलाव़ ही दीगर मज़ाहिब के लोग भी हाज़िर होते। आप के वअज़ का यह असर होता कि बहुत से यहूदी, ईसाई और दूसरे कुफ़्फ़ार कलेमह पढ़ कर मुसलमान हो जाते। (बहजतुल असरार, सफ्ह २८९, कलाइदुल जवाहिर, सफ्ह २९२) ब-हवाला अनवारुल बयान।
- सवाल:** हज़रत गौसे आज़म की बारगाह में हज़रत ईसा अलैहिसलाम के एक राहिब के भेजने के मुतअलिक बताइये?
- जवाब:** एक राहिब आया और हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के नूरानी हाथ पर तौबा किया और मुसलमान हो गया। फिर उस

राहिव ने मजमए आम में व्यान किया कि मैं यमन का रहने वाला हूँ
मुझे मुसलमान होने का शौक हुवा तो मैं ने यह मुसम्मम इरादह कर
लिया कि यमन में जो शख्स सब से ज्यादह परहेज़गार होगा उसी के
हाथ पर मुसलमान हूँगा। इसी ख्याल में था कि मुझे नींद आ गई
ख़बर में हज़रत सय्यदुना ईसा अलैहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया ऐ
सनाम बग़दाद चले जाओ और शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी के हाथ
पर मुसलमान हो जाओ इस लिये कि इस ज़माने में स्वेह ज़मीन के
लोगों में सब से बेहतरीन वही हैं। (वहजतुल असरार)

सवाल: मुर्दह ज़िन्दह हो गया इस वाकिअह पर रौशनी डालिये?

जवाब: सरदारे औलिया हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक
दिन अपने चन्द मुरीदीन और साथियों के साथ एक मुहल्ले से गुज़रे
तो देखा कि एक मुसलमान और एक ईसाई आपस में झगड़ रहे हैं,
पीराने पीर आका दस्तगीर ने झगड़े का सबब दरयाफ़त फ़रमाया तो
मुसलमान ने अर्ज़ किया कि यह ईसाई कहता है कि हज़रत ईसा
अलैहिस्सलाम तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से
अफ़ज़ल हैं। हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने ईसाई से
फ़रमाया कि तुम किस वजह से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को
अफ़ज़ल कहते हो। ईसाई कहने लगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम
मुर्दों को ज़िन्दह कर देते थे। हज़रत गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला
अनहु ने फ़रमाया मैं नबी नहीं बल्कि रसूले मुअज्ज़म सल्लल्लाहु
तआला अलैहि वसल्लम की औलाद और उम्मती हूँ। अगर मैं मुर्दे को
ज़िन्दह कर दूँ तो क्या तू हमारे प्यारे नबी सरकारे मदीनह सल्लल्लाहु
तआला अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत व बरतरी को तसलीम करेगा।
ईसाई ने कहा ज़खर करूँगा। हुजूर गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला
अनहु ने फ़रमाया कि कब्रस्तान लेकर चल और कोई बहुत पुरानी कब्र
जिस को तू जानता हो बता, मैं कब्र के मुर्दे को ज़िन्दह करूँगा। वह
ईसाई हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु को लेकर
कब्रस्तान गया और एक पुरानी बोसीदह कब्र की तरफ़ इशारह किया।
आप ने कब्र की तरफ़ देखा और इशाद फ़रमाया इस कब्र का मुर्दह
दुनया में गाने वजाने का पेशा करता था। अगर तेरी मर्ज़ी हो तो यह
मुर्दह गाता हुवा कब्र से बाहर आये हैरत से ईसाई ने अर्ज़ किया यह

तो और अहेम बात है ऐसा ही कीजिये, हज़रत गौस पाक ने कब्र को देखा और फरमाया “कुम बिझनिल्लाह” तो कब्र शक हुई और मुर्दह ज़िन्दह होकर गाता हुवा कब्र से बाहर निकल आया। इसाई ने यह करामत देख कर तौबा की और मुसलमान हो गया। (तफ़रीहुल ख़वातिर)

सवालः मुर्गी के ज़िन्दह होने का वाकिफ़ अह बयान कीजिये?

जवाबः एक औरत अपने लड़के को लेकर हज़रत गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की खिदमते आलिया में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि हुजूर यह लड़का आप से बेहद मोहब्बत व अकीदत रखता है, अपनी गुलामी में कुबूल फरमाएँ और शरीअत व तरीक़त की तअलीम से आरास्ता फरमा दें। चुनाँचे वह लड़का इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गया। एक दिन वह औरत अपने लड़के को देखने के लिये आई तो देखा कि उस का लड़का जौ की रोटी बगैर सालन के खा रहा है और कसरते इबाद व रियाज़त के असर से बहुत दुबला और लाग़र हो गया है। फिर जब वह औरत बारगाहे गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु में हाज़िर हुई तो देखा कि आप मुर्गी का गोश्त तनाउल फरमा चुके हैं और हड्डियाँ बरतन में रखी हुई हैं। औरत ने अर्ज़ किया कि मेरे आका आप ने मेरे बच्चे पर कोई शफ़क़त नहीं फरमाई। आप तो मुर्गी खा रहे हैं और मेरे बच्चे को जौ की रोटी सूखी बगैर सालन के खिला रहे हैं। यह सुन कर आप ने अपना दस्ते मुबारक उन हड्डियों पर रखा और फरमाया या कूमी बिझनिल्लाहिल्लज़ी युहइल इज़ामा व हिया रमीम। यानी ऐ मुर्गी तू उस खुदा के हुक्म से ज़िन्दह हो कर खड़ी हो जा जो गली सड़ी हड्डियों को ज़िन्दह फरमाता है।

हज़रत गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु का हुक्म सुनते ही मुर्गी ज़िन्दह होकर खड़ी हो गई और ब-ज़बाने फ़सीह यह पढ़ा ला-इलाहा इलल्लाहु मोहम्मदुर्रस्तुल्लाह, अश्शैखु अब्दुल कादिरु वलियुल्लाह। तब आप ने फरमाया ऐ बूढ़ी माँ सुन जब तेरा बेटा इस दर्जा तक पहुंच जाएगा तो जो चाहेगा खाएगा।

(बहजतुल असरार, सफह १६३, कलाइदुल जवाहर, सफह ३८, शैख़ अब्दुल हक़, जुबदतुल आसार, सफह ८६)

सवाल: अंधा और मफलूज सेहत पा गया वाकिअह बयान कीजिये?

जवाब: हज़रत शैख अबुल हसन करशी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने बयान किया कि मैं और हज़रत शैख अबुल हसन अली बिन हीती अलैहिर्रहमह वर्रिज़वान हज़रत शैख मुहम्मदीन अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु की खिदमत में बैठे थे कि हज़रत की खिदमत में ताजिर अबू ग़ालिब बग़दारी हाज़िर हुवा और अर्ज किया कि ऐ मेरे सरकार आप के रहीम व करीम नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स की दावत की जाये उस को चाहिये कि वह दावत को कुबूल करे और मैं आप को अपने मकान पर दावत की ज़हमत देने के लिये हाज़िर हुवा हूँ। सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि अगर मुझे इजाज़त मिली तो आऊँगा। आप ने मुराकेबह किया और फरमाया कि मैं ज़खर आऊँगा। मुकर्रह वक्त पर मैं और शैख हीती आप के हमराह ताजिर अबू ग़ालिब बग़दादी के मकान पर पहुंचे वहाँ देखा तो बग़दाद के बहुत से उलमा मशाइख़ और आयाने हुकूमत मौजूद थे आप के सामने दस्तरख़्वान लगाया गया जिस पर रंगारंग के खाने चुने हुये थे और दो शख्स एक बहुत बड़ा टोकरा उठा कर लाये जिस का मुंह ढका हुवा था यह टोकरा दस्तरख़्वान के एक तरफ लाकर रख दिया गया। मेज़बान अबू ग़ालिब ने हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की खिदमत में अर्ज किया कि इजाज़त है खाना शुरू किया जाये। आप ने कुछ नहीं फरमाया अपना सर झुकाये रहे, न खुद खाया न दूसरों को इजाज़त दी। अहले मजलिस पर आप की हैबत इस तरह तारी थी गोया उन के सरों पर परिन्दे बैठे हैं फिर आप ने मुझे और शैख अली बिन हीती को इशारह किया कि उस टोकरे को उठा कर यहाँ लाओ, वह टोकरा लाया गया जो बहुत वज़नी था फिर आप ने मुझे और शैख अली बिन हीती को हुक्म दिया कि इस टोकरे को खोलो जब हम ने टोकरा खोला तो उस में अबू ग़ालिब ताजिर का अंधा और फ़ालिज ज़दह लड़का बैठा हुवा था। आप ने उस को देख कर फरमाया “कुम बि-इज़निल्लाह” अल्लाह तआला के हुक्म से तू तंदुरुस्त हो कर खड़ा हो जा आप के फरमाते

ही वह लड़का तंदुरुस्त शख्स की तरह खड़ा हो गया और कोई बीमारी उस में पौजूद नहीं थी और वह दौड़ने लगा। हुजूर गौस पाक रजियल्लाहु तआला अनहु की यह करामत देख कर मजलिस में शोर बर्पा हो गया और लोग नअरे लगाने लगे और गौसे आज़म रजियल्लाहु तआला अनहु बगैर कुछ खाये पिये उस हुजूम में से उठ कर अपनी खानेकाह शरीफ में आ गये। हज़रत शैख़ अबू सईद केलवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहु तआला अनहु अल्लाह तआला के हुक्म से मादरज़ाद अंधों और बर्स वालों को अच्छा करते और मुदों को जिलाते हैं।

(बहजतुल असरार, सफ्ह १८, शैख़ अब्दुल हक, जुबदतुल आसार, सफ्ह ६०)

सवालः गौस पाक की दुआ से तकदीर बदल गई, मुख्तसर बयान कीजिये?

जवाबः शैख़ अबुल मसऊद बिन अबी बक्र हरीमी बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया है कि अबुल मुज़फ्फर हसन बिन तमीम ताजिर शैख़ हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज किया या सव्यदी! मैं तिजारत की ग़र्ज से सफर करना चाहता हूँ। शैख़ हम्माद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अगर तुम ने इस साल सफर किया तो कत्ल कर दिये जाओग, और तुम्हारा माल व असबाब लूट लिया जाएगा। अबुल मुज़फ्फर ताजिर बड़ा हैरान व परेशान होकर मजलिस से बाहर आ गया और हुजूर गौसे आज़म रजियल्लाहु तआला अनहु की बारगाहे करम में हाज़िर होकर सफर में जाने की इजाज़त चाही। सरकार गौसे आज़म रजियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया ऐ अबुल मुज़फ्फर तुम सफर करो सहीह सलामत लौट आओगे और मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ। अबुल मुज़फ्फर ताजिर सफरे तिजारत पर निकला और अपना सामान एक हज़ार दीनार में फ़रोख्त कर दिया और वह एक हम्माम में नहाने की ग़र्ज से गया और ताक में एक हज़ार दीनार की थैली रख दी और उसे उठाना भूल गया और उस मकान में आ गया जहाँ उस का क्याम था और गहरी नींद में सो गया। आलमे ख़बाब में क्या देखता है कि वह एक काफिले के हमराह सफर कर रहा है और रास्ते में अरब के डाकुओं

ने उस काफिले पर हमला कर दिया और काफिले के हर शख्स को मौत की नींद सुला दिया और एक डाकू ने उस की गर्दन पर तलवार मारी जिस से गर्दन कट कर अलग हो गई। वह इस परेशान कुन ख़ब से बेदार हुवा और काँपने लगा और उसे अपनी गर्दन पर खून का असर महसूस हो रहा था और कारी ज़र्ब का दर्द महसूस हो रहा था, उसे अपना स्वप्न याद आया और हम्माम में दौड़ कर गया, उस का हज़ार दीनार ताक में खा हुवा था।

बग़दाद शरीफ़ सफ़र से वापसी पर उस नेफ़ेसला किया कि दोनों बुजुर्गों से मुलाक़ात करूँगा और हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह जो ज़ईफ़ थे उन की खिदमत में हाज़िर हुवा। हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह ने देखते ही फ़रमया: शैख़ सव्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के पास जाओ क्यों कि वह अल्लाह तआला के महबूब हैं और उन्होंने ने तुम को क़त्ल होने और तुम्हारे माल के नुक़सान होने से बचाने के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में सत्तर बार दुआ की है जबकि तुम्हारी तक़दीर में क़त्ल और माल का नुक़सान लिखा था लेकिन अल्लाह तआला ने शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु की दुआ की बरकत से तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और सिर्फ़ ख़ब से उस का मंज़र दिखा कर क़त्ल और माल के नुक़सान से बचा लिया। फिर अबुल मुज़फ़फ़र ताजिर सरचश्मए विलायत सरकारे गौसियत। हुज़ूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु की रहमत वाली सरकार में हाज़िर हुवा आप ने फ़रमाया तुम को शैख़ हम्माद रहमतुल्लाह अलैह ने मेरी सत्तर दुआ का वाक़िअह सुना दिया है हमारे आक़ा गौसे आज़म ने फ़रमाया खुदा की क़सम मैं ने तुम को क़त्ल से और तुम्हारे माल को नुक़सान से बचाने के लिये अपने अल्लाह तआला की बारगाहे फ़ज़्लो करम में सत्तर बार दुआ की जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और बेदारी की चीज़ को ख़ब से दिखा दिया। (बहजतुल असरार, शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी, जुबदतुल आसार, सफ़ह ८५)

सवाल: बुरी किस्मत अच्छी हो गई किस तरह व्यान कीजिये?

जवाब: हज़रत अबुल ख़िज़र हुसैनी व्यान करते हैं कि हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के ख़ादिम को रात में कई मर्तवा एहतलाम हुवा और उसे हर मर्तवा नई सूरत नज़र आई जिन में से बाज़ से तो वह वाकिफ था और बाज़ औरतों को वह नहीं जानता था। जब सुबह हुई तो वह हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु की बारगाह में हाज़िर होकर अपनी ख़्वाब की हालत व्यान करना चाही तो उस के कुछ कहने से पहले ही सरकार गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया: रात में तुम को कई बार एहतलाम हुवा है और मैं ने अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत में लौहे महफूज़ में देखा तो उस में लिखा हुवा था कि तू फुलाँ फुलाँ औरत से ज़िना करेगा। तो मैं ने अल्लाह तआला की बारगाहे बेनियाज़ी में तेरे लिये दुआ की तो अल्लाह तआला ने मेरी दुआ की बरकत से बेदारी के वाकिअह को ख़्वाब में बदल दिया और तेरी बुरी किस्मत को अच्छी बना दी। (क़लाइदुल जवाहर, १३०)

सवाल: गौस पाक के ग्यारह नामे मुवारक की फ़ज़ीलतें व्यान कीजिये?

जवाब: पीर रोशन ज़मीर महबूबे सुवहानी कुतबे रब्बानी ग्यारहवीं वाले पीर हुजूर गौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अनहु के ग्यारह नामे मुवारक नमाज़ के बाद और रात को सोते वक़्त और सुबह में पढ़ना ज़्यादह सवाब है और उस के विर्द से दिल की मुरादें पूरी होंगी और दुश्मन पर फतेहयाबी और बलाएँ दूर होंगी और तमाम नेक कामों में कामयाबी हासिल होगी।

(किताब नाफिउल ख़लाइक़)

सवाल: सरकारे बग़दाद के ग्यारह नामे मुवारक बताइये?

- | | | |
|-------|-------------------------|-------------|
| जवाब: | (१) सय्यद मुहय्युद्दीन | अमरुल्लाह |
| | (२) शैख़ मुहय्युद्दीन | फ़ज़लुल्लाह |
| | (३) औलिया मुहय्युद्दीन | अमानुल्लाह |
| | (४) मिसकीन मुहय्युद्दीन | नूरुल्लाह |
| | (५) गौस मुहय्युद्दीन | कुतबुल्लाह |
| | (६) सुलतान मुहय्युद्दीन | सैफुल्लाह |

(७)	ख्वाजा मुहम्मदीन	फ़रमानुल्लाह
(८)	मख्दूम मुहम्मदीन	बुरहानुल्लाह
(९)	दुरवेश मुहम्मदीन	आयतुल्लाह
(१०)	बादशाह मुहम्मदीन	गौसुल्लाह
(११)	फकीर मुहम्मदीन	मुशाहिदुल्लाह

सवाल: सलाते गौसिया के बारे में बताइये?

जवाब: रबीउल आखिर की एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह तारीखों में से किसी भी रात में सलाते गौसिया पढ़ें इनशाअल्लाह तआला हाजतें पूरी होंगी। बाद नमाज़े मग़रिब दो रकअत नमाज़े नफ़्ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में बांद अल-हम्दु शरीफ के ग्यारह बार सूरेह इख़ालास पढ़ें फिर सलाम के बाद سुबहानल्लाहि व बिहमदिही सुबहानल्लाहिल अज़ीम व बिहमदिही असत़गफिरल्लाह, ग्यारह मर्तबा पढ़ें! फिर ग्यारह मर्तबा हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में दस्कद व सलाम अर्ज़ करें और ग्यारह बार यह कहें। या रसूलल्लाहि, या नबिय्यल्लाहि अग्रिसनी वमदुदनी फी क़ज़ाइ छाजती या क़ाज़ियल हाजाति फिर इराक की तरफ ग्यारह क़दम चलें हर क़दम पर यह कहें। या गौसस्सकलैन या करीमत्तरफैन वमदुदनी फी क़ज़ाइ छाजती या क़ाज़ियल हाजाति। फिर हुजूर सम्पदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सम्पदेना गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वसीलए मुबारक से अल्लाह पाक से दुआ माँगो। (अनवारुल बयान, जिल्द अब्वल, सफ़ह ५७३)

सवाल: नबी का क़दम गौसे आज़म के काँधे पर किस तरह?

जवाब: आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने लिखा है। जिस की तलखीस पेश है कि बड़े पीर, हुजूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु के बारे में बअज़ किताबों में लिखा है कि महबूबे खुदा मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेराज के लिये जब तशरीफ ले जा रहे थे तो बुराक पर सवार होते वक्त हुजूर गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की रुहे मुबारक हाज़िर हुई और आप ने काँधा शरीफ को आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश किया कि हुजूर

سَلَّلَلَّا هُوَ تَبَّاعَالٌ أَلَّا هِيَ وَسَلَّلَمُ عَلَىٰهِ كَدْمٌ رَخَّ كَرَ بُرَاقُ پَرَ سَوَارٌ هُونَّا تَبَّاعَالٌ أَلَّا مُؤْكَدٌ پَرَ آكَارَ كَرِيمٌ مُعْسَطَفٌ جَانَ رَحْمَتٌ سَلَّلَلَّا هُوَ تَبَّاعَالٌ أَلَّا هِيَ وَسَلَّلَمُ نَعَنَ شَهْجَادَ شَهْجَادَ اَبْدُولَ كَادِيرَ جَيْلَانِيَ رَجِيْلَلَّا هُوَ تَبَّاعَالٌ أَنَّهُنَّا كَوَنَ نَوَاجَزَ كَيْ آپَنَ کَأَنْدَھَ پَرَ آپَنَ پَاءَ مُوبَارَكَ کَوَنَ رَخَّا اُورَ بُرَاقَ پَرَ سَوَارَ هُونَےٰ اُورَ فَرَمَائَ کَيْ مَرَا پَاؤْ تَرِيَ غَرْدَنَ پَرَ هُوَ اُورَ تَرِا پَاؤْ سَارَ وَلِيَوَنَ کَيْ غَرْدَنَ پَرَ هُونَگَا يَهُوَ وَکِيْاَبَھَ مَكَکَ مُعَذَّبَ مَكَکَ کَيْ سَرْجَمَنَ پَرَ هُونَوا (فَتَّاَوَ رَجِيْلَيَا، جِيلَد ۹۲، سَفَه ۲۰)

सवाल: गौसे आज़म ने बारह बरस की डूबी कश्ती निकाली मुख्तसर बयान कीजिये?

जवाब: महबूबे सुबहानी, शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के बारे में यक करामत बहुत ही मशहूर है और महफिलों में उलमाए केराम बयान भी करते हैं कि एक बूढ़ी औरत लबे दरया बैठी रो रही थी इत्तिफ़ाक़न हज़रत गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु का उस तरफ गुज़र हुवा। हज़रत ने दरयाप़त फरमाया कि क्यों रो रही हो? बूढ़ी औरत ने अर्ज की हज़रत! बारह बरस हो गये हैं इस दरया में मेरी बेटे की बारात मआ सामान ढूब गई और मेरा लड़का भी ढूब गया उसी के ग़म में यहाँ आकर मैं रोज़ाना रोती हूँ। आप ने दुआ की तो अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फरमाई और बारह बरस की डूबी कश्ती बारात और साज़ो सामान के साथ सहीह सालिम निकल आई और बूढ़ी औरत खुश होकर अपने मकान को चली गई। (फ़तावा रज़ियिया शरीफ, जिल्द ۹۲، سَفَه ۱۶۷)

सवाल: तमाम कादरियों को बख़शिश की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि मुझे एक काग़ज़ दिया गया जो इतना बड़ा था कि जहाँ तक निगाह पहुंचे, उस काग़ज़ में मेरे असहाब और मुरीदीन के नाम लिखे थे जो क़्यामत तक होने वाले थे और मुझ से कहा गया कि तुम्हारे इन सब मुरीदों को तुम्हारी वजह से बख़श दिया गया और मैं ने दोज़ख के दारोगा से पूछा कि क्या तुम्हारे पास मेरा कोई मुरीद है? तो दारोगा ने कहा कि आप का एक मुरीद भी दोज़ख में नहीं है। (बहजतुल असरार, سَفَه ۲۶۴)

सवाल: सरकार गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु का हाथ मुरीदों के सर पर कैसे?

जवाब: हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अनहु फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआला की इज़्जत व जलाल की कसम है कि “इन्ना يَدِيْ أَلَا مُرِيْدِيْ كَسْمَاءِ اَلَّا اَرْجِيْ” मेरा हाथ मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आसमान का साया ज़मीन पर। अगर मेरा मुरीद उमदह नहीं तो मैं तो उमदह हूँ, मुझे अपने रब तआला के इज़्जत व जलाल की कसम कि मेरे कदम मेरे रब तआला के सामने बराबर रहेंगे यहाँ तक कि मुझ को और तुम को जन्नत की तरफ ले जाएगा। (बहजतुल असरार, सफ़ह २६४)

सवाल: मुरीदे सादिक की दुआ ने चोर को मुशिदि कामिल बना दिया कैसे?

जवाब: आशिके इमाम अहमद रज़ा, अलमबरदारे, मसलके आला हज़रत, रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी अलैहिरहमह की ज़बानी मुलाहिज़ा कीजिये।

इराक का मशहूर डाकू अब्दुल्लाह गुनाहों से ताइब हो चुका था और अल्लाह तआला की बारगाह में कुर्ब का मकाम पाने के लिये पीर व मुशिद का होना लाज़िमी है, इसी मक्सद से सरफ़राज़ी और कामयाबी के लिये अब्दुल्लाह भी पीर व मुशिद की तलाश में था मगर नेक व सच्चे लोग आसानी के साथ नहीं मिला करते, मगर जिस पर खुदाए तआला का फ़ज्लो करम हो जाये। आज पूरी रात अब्दुल्लाह ने रो-रो कर गुज़ारी थी कि इलाही! मुझे मेरे पीर व मुशिद से मिला दे। आखिर सुबह होने वाली थी और अब्दुल्लाह ने भी फैसला कर ही लिया था कि आज मुरीद हो जाना है और सुबह जो सब से पहले मिलेगा उसी को पीर व मुशिद बना लूँगा। अब्दुल्लाह रात भर जागा था, खूब दुआएँ माँगी थीं, अब्दुल्लाह नमाज़े फ़ज्र के लिये घर से निकला। एक चोर जिस का नाम यहया था, चोरी कर के रात के अंधेरे में भागा जा रहा था कि अब्दुल्लाह ने दौड़ कर यहया चोर को पकड़ लिया और बड़ी मन्नत व समाजत के साथ अर्ज़ करने लगा कि अल्लाह तआला ने मेरी रात भर की दुआ को कुबूल फ़रमा लिया है और आप को मेरा पीर व मुशिद बना कर भेज दिया है इस लिये

जब तक आप मुरीद नहीं करते मैं आप को हर्गिज़ नहीं छोड़ूँगा। और यहया हैरान व परेशान है कि मैं पीर व मुर्शिद कहाँ हूँ मैं तो एक चोर हूँ और आज पकड़ा गया। यहया चोर ने कहा कि मैं पीर व मुर्शिद नहीं हूँ तुम मुझ को छोड़ दो। मगर अब्दुल्लाह अपनी ज़िद पर है कि तुम जब तक मुझ को मुरीद नहीं कर लेते हो मैं आप को छोड़ूँगा नहीं। बादेले नाख्यास्ता ना चाहते हुये भी और जलदी से रात के अंधेरे में घर पहुँचने की ग़ज़ से ताकि लोग देख न लें, मजबूरन यहया चोर ने अब्दुल्लाह का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा कि मैं ने तुम को मुरीद किया और मैं जब तक वापस न आऊँ तुम इसी मकाम पर खड़े रहना। यहया तो चोर था, जान छुड़ा कर झूट मूट मुरीद कर के अपनी राह लिया। लेकिन अब्दुल्लाह वह अभी कुछ दिनों पहले ही डाकाज़नी से तौबा किया था उस की तलब तो सच्ची थी, वह तो यही समझ रहा है कि रात की मेरी दुआ कुवूल हुई और अल्लाह तआला ने मुझ को पीर व मुर्शिद अता फ़रमा दिया है।

अब अब्दुल्लाह उसी मकाम पर खड़ा है जहाँ यहया चोर ने मुरीद कर के कहा था कि जब तक मैं वापस न आऊँ तुम इसी जगह खड़े रहना। पीर व मुर्शिद के इन्तिज़ार में महीना गुज़रा मगर पीर व मुर्शिद नहीं आये, साल गुज़रा मगर पीर व मुर्शिद का पता नहीं तक़रीबन तीन साल का अर्सा गुज़र गया मगर पीर व मुर्शिद का कोई सुराग़ नहीं चला। हकीकत तो यह थी कि वह पीर व मुर्शिद नहीं बल्कि चोर था मगर एक सच्चे और पक्के मुरीद की दुआ किस तरह असर दिखाती है कि झूट मूट में मुरीद कर के जान बचा कर भाग जाने वाला यहया चोर तीन साल के बाद चोरी करने के लिये बग़दादे मुअल्ला में महवूबे सुबहानी, कुत्बे रब्बानी, पीराने पीर दस्तगीर शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के मकान में दाखिल हुवा, तलाशे विसयार के बाद जब कुछ हाथ न आया तो कहने लगा कि बड़ा नाम है मगर इस घर से कुछ न मिला। उस को क्या पता था कि अब वह निमत मिलने वाली है जो हज़ार कोशिशों के बाद भी नहीं मिला करती। घर से निकल कर भागना चाहा तो आँख अंधी हो गई, अब दर्वाज़ह ही नहीं मिलता घर से निकले कैसे, मजबूरन घर के

एक गोशे में बैठ गया। उधर हज़रत ख़िज्ज्र अलैहिस्सलाम तशरीफ लाये और फरमाया कि फुलाँ शहर के कुतुब का इन्तिकाल हो गया है, वहाँ के लिये कुतुब चाहिये। महबूबे सुबहानी हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया! सुबह कुतुब का इन्तिज़ाम हो जाएगा। हज़रत ख़िज्ज्र अलैहिस्सलाम ने फरमाया। सुबह होने से पहले अगर कोई बला नाज़िल हो गई तो उस का ज़िम्मेदार कौन होगा। महबूबे सुबहानी, हमारे बड़े पीर, हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि मेरे घर में एक मेहमान आया है, उस चोर को बुलाओ उसी को कुतुब बना कर भेज देता हूँ। ख़ादिम उसी यह्या चोर को लेकर बारगाहे कादरियत व गौसियत में हाज़िर हुये, हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कौंची से उस के बाल को तराशा और अल्लाह तआला की अता की हुई ताकत व कुव्वत से मसनदे विलायत व कुतबियत पर बैठा दिया और उस का हाथ हज़रत ख़िज्ज्र अलैहिस्सलाम के हाथ में दे दिया और फरमाया कि उस जगह पर जा कर अब्दुल्लाह को मुरीद करो और फिर अपने मकाम पर जाओ। हज़रात एक सच्चे मुरीद की दुआ ने यह्या चोर को वली व कुतुब और मुशिदि कामिल बना दिया। (सवानेह गौस व ख़्वाजा, सफ़ह ۹۷)

सवाल: चोर वली कैसे हो गया?

जवाब: हमारे पीर, हज़रत गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की चादर मुबारक बड़ी कीमती थी, उस में बेशबहा हीरे, जवाहरात लगे हुये थे। एक चोर काफी दिनों से इसी ताक में था कि मौका मिले और चादर को चुराऊँ। एक दिन महबूबे सुबहानी, हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु जंगल की तरफ़ चले वह चोर भी पीछे पीछे चला जब हुजूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु अनहु एक झाड़ी की आड़ में पहुंचे तो चोर ने मौका को ग़नीमत जानते हुये पीछे से कीमती चादर को पकड़ा और लेकर भागने वाला ही था कि हज़रत गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने आसमान की जानिब मुंह कर के दुआ की या अल्लाह तआला! तू ख़ूब जानता है कि यह चोर है, मगर इस ने मेरे दामन को पकड़ा है, अब अगर चोर ही रहा तो कहा जाएगा कि महबूबे सुबहानी अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का

दामन पकड़ने वाला भी चोर होता है। गैबी निदा आई। तुम्हारे दामन की बरकत से इस चोर को नेक व पारसा ही नहीं बल्कि वलीए कामिल बना दिया। (अनवारुल बयान, सफह ६०२)

सवाल: कादरी निसबत से धोबी कैसे बख्शा गया?

जवाब: शहज़ादए रसूल, हसनी, हुसैनी पूल हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु का एक धोबी था जो आप के कपड़े धोया करता था। उस का इन्तिकाल हो गया तो कब्र में मुनकर नकीर सवालात किये तो उस धोबी ने जवाब दिया कि मैं महबूबे सुबहानी, हुजूर गौसे पाक जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का धोबी हूँ, फरिश्तों ने रब तआला की बारगाह में अर्ज़ की। या अल्लाह तआला हमारे सवालात पर कहता है कि मैं महबूबे सुबहानी शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का धोबी हूँ। तो रब तआला ने फरमाया जब मेरे महबूब अब्दुल कादिर जीलानी का नाम लेता है तो मैं ने उस नाम व निसबत के तुफैल से उस को बख्शा दिया। (अल-इज़ाफातिल यौमियह, जिल्द २, सफह २६)

सवाल: एक शराबी पर एक नेक की सोहबत व निसबत के असर के मुतअल्लिक बताइये?

जवाब: बुजुर्गों ने बयान फरमाया है कि अल्लाह के वली हज़रत सिर्फ़ सक्ती रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपने असहाब व मुरीदीन के साथ तशरीफ ले जा रहे थे कि एक शराबी को देखा कि लबे सङ्क सरे राह नशे में धुत पड़ा हुवा है मगर उस की ज़बान पर अल्लाहू की सदा जारी है। अल्लाह के दोस्त, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नायब हज़रत सिर्फ़ सक्ती रज़ियल्लाहु तआला अनहु रुक गये और इरशाद फरमाया एक गिलास पानी लाया जाये। पानी का गिलास हाज़िरे खिदमत किया गया, आप ने अपने दस्ते मुबारक से उस शराबी के मुंह को पानी से धुल दिया। पाक व साफ कर के फरमाया कि अब पाक मुंह से अल्लाह तआला का पाक नाम लेगा और तशरीफ ले गये। जब रात को सोये तो ख़्वाब में बशारत दी गई कि ऐ मेरे नेक सिर्फ़ व सक्ती तूने मेरी ख़ातिर मेरे शराबी बन्दे के मुंह को पाक व साफ किया और अब उस के मुंह पर तेरा हाथ लग गया है

और मुख्तसर सोहबत तेरी उस बन्दे को नसीब हो गई है तो तेरी सोहबत और निसबत की वरकत से मैं ने उस के दिल को धुल कर पाक व साफ़ कर दिया है। हज़रत सिर्फ़ सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अनहु ख़्वाब से बेदार हुये, नमाज़े तहज्जुद के लिये मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो क्या देखा कि कल जो शख्स शराब के नशे में धुत होकर पड़ा हुवा था मस्जिद में तहज्जुद की नमाज़ अदा कर रहा है। हज़रत सिर्फ़ सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैरत व इसतेजाब में उस शख्स को देखने लगे तो वह शख्स हज़रत सक़ती रज़ियल्लाहु तआला अनहु से कहता है कि हज़रत आप हैरान व परेशान क्यों हैं, अल्लाह तआला ने आप को सब कुछ तो बता दिया है। (ख़ैरुल मजालिस)

सवाल: पीर व मुर्शिद ने मुरीद को शैतान के शर से बचा लिया कैसे?

जवाब: आशिके रसूल, इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु फ़रमाते हैं कि जब इन्सान की नज़्अ का वक़्त क़रीब आता है तो शैतान जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह मरने वाले का ईमान सल्ब हो जाये, क्यों कि उस वक़्त ईमान से फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा। चुनाँचे हज़रत इमाम फ़ख़रदीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के इन्तिकाल का वक़्त क़रीब आया तो उस वक़्त शैतान आ गया और कहने लगा ऐ इमाम राज़ी तुम ने उम्र भर मुनाज़िरे किये, क्या तूने खुदा को पहचाना? इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया बेशक खुदा एक है। इबलीस ने कहा कि खुदा एक है तो उस पर क्य दलील? हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दलील पेश की तो शैतान जो मुअल्लिमुल मलकूत रह चुका था, उस ने वह दलील रद कर दी। हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दूसरी दलील कायम की तो इबलीस लईन ने वह भी काट दी। यहाँ तक कि हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने ३६० दलीलों कायम कीं और इबलीस ने सारी दलीलों को काट दिया। अब इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु सख्त परेशान व हैरान व निहायत मायूस थे कि अब कैसे उस शैतान मरदूद से बचा जाये। कि आप के पीर व मुर्शिद ने (अपने मुरीद की परेशानी और बेचारगी और शैतान की

शरारत को देख कर) आवाज़ दी कि क्यों नहीं कह देता कि मैं खुदाए तआला को बेदलील एक मानता हूँ। (अल-मलफूज़ शरीफ़, सफ्ह ५३)

सवाल: हुजूर के ज़मानए अक़दस के दो वलीए जलील हज़रत सय्यद अबुस्सज्द बिन अहमद बिन अबी बक्र हरीमी व हज़रत सय्यदी अबू अम्र उसमान अल-सरीफीनी कुद्दिसल्लाहु सिर्हुमा क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: *वल्लाहु मा अज़हरल्लाहु तआला वला यज़हरु इल्ल वजूदि मिस्तुशशैख़ मुहियुद्दीन अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु।*
तर्जमहः खुदा की कसम अल्लाह तआला ने कोई वली ज़ाहिर किया न ज़ाहिर करे मिस्तुशशैख़ अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु को। (फतावा रज़विया, जिल्द २८, सफ्ह ६४)

सवाल: हज़रत सय्यदेना ख़्वाजा खिज़र अलैहिस्सलाम क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: **तर्जमहः** अल्लाह सुबहानहू व तआला ने जिस वली को किसी मक़ाम तक पहुंचाया शैख़ अब्दुल कादिर उस से आला रहे और जिस मुकर्रव को कोई हाल अता किया शैख़ अब्दुल कादिर उस से बाला रहे, अल्लाह के जितने औलिया हुये और जितने होंगे क़्यामत तक सब शैख़ अब्दुल कादिर का अद्व करते हैं। (फतावा रज़विया, जिल्द २८, सफ्ह ६५)

सवाल: यह बयान किया जाता है कि सरकार गौसे पाक रज़ियल्लाहु अनहु ने हज़रत शैख़ सय्यद रेफ़ाई के हाथ पर बैअत की है, कहाँ तक दुरुस्त है?

जवाब: यह बात बिलकुल ग़लत है। (फतावा रज़विया, जिल्द २८, सफ्ह ६७)

सिराजुल कादिरी बहराइची
बानी व नाज़िमे आला साबिरी यतीन ख़ाना

जामिया सरकार आला हज़रत, गंगवल बाज़ाद, बहराइच
८ शब्वालुल मुकर्रम १४३६ हिजरी मुताबिक़ २५ जूलाई २०१५ ई.

ग़ाज़ी किताब घर की किताबें

इस्लामी हीरे कुइज़ यानी
सुन्नी कुइज़
गुस्ताख़ कलम
अनवारे कुरआनी
मुजरिम अदालत में
शबे बराऊत
तोहफ़ए रमज़ान
बक़ेर रिज़वियत, बर फ़िलए
वहाबियत
बक़ेर वहदत बर फ़िलए नज्दियत
अंधे नज्दी देख ले
मुनाफ़िकीन
बहिश्ती ज़ेवर पर रिज़वी
ऐटम बम
उलमाए देवबंद की कहानी
तोहफ़ए निकाह
दश्ते कर्बला
शहीदाने कर्बला
अस्ली दस बीवियों की कहानी
अस्ली सय्यदा बीबी की कहानी
माँ का आंचल
क़ब्र से जन्मत तक
लुआबे दहने मुस्तफ़ा مُسْتَفَّا
अस्हाबे कहफ़
मकामे आला हज़रत
तारीख़ी कहानियां
फ़ज़ाइले मज्मूआए नमाज़
फ़तिहा इमाम जाफ़र सादिक़

फ़तिहा का सहीह तरीका
चहल हदीस
नूरे यज़दां (वेकल तसाही
बलरामपूरी)
इरफ़ाने मुस्तफ़ा (पॉकिट)
नग़माते मुस्तफ़ा (पॉकिट)
अनवारे मुस्तफ़ा (पॉकिट)
जल्वए मुस्तफ़ा (पॉकिट)
मन्क़बते (पॉकिट)
क़ादरी रिज़वी मज्मूआए सलाम
ग़ाज़ी क़ायदा
ग़ाज़ी क़ायदा मुकम्मल
आप का मदर्सा अब्वल
आप का मदर्सा दोम
आप का मदर्सा सोम
बहारे रहमत क़ायदा
बहारे रहमत अब्वल
बहारे रहमत दोम
बहारे रहमत सोम
सुन्नी कुइज़ हमारे आका
सुन्नी कुइज़ अंवियाए
किराम अब्वल
सुन्नी कुइज़ अंवियाए
किराम दोम
सुन्नी कुइज़ अंवियाए
किराम सोम
सुन्नी कुइज़ अज़वाजे
तव्विवात

सुन्नी कुइज़ फर्ज़न्दाने मुकर्रम
सुन्नी कुइज़ खुलफ़ाए
राशिदीन
सुन्नी कुइज़ सहावए
किराम
सुन्नी कुइज़ सहावियात
सुन्नी कुइज़ मालूमाते आप्पा
सुन्नी कुइज़ दास्ताने ज़ुल्म
व वरवरियत
सुन्नी कुइज़ मेरे आला हज़रत
सुन्नी कुइज़ नमाज़
सुन्नी कुइज़ कुरआने मजीद
सुन्नी कुइज़ औलियाए किराम
सुन्नी कुइज़ मेरे ख़्वाजा
हिन्द के राजा
सुन्नी कुइज़ सरकार गौसे
आज़म
सुन्नी कुइज़ अक्यद व मसाइल
वहाबी मुल्लाओं की शाख़ियां
मस्अलए तकफ़ीर और
इमाम अहमद रज़ा
(शारेह बख़री मफ्तु महम्मदु
शरीफ़ुल हक़ अमजदी)
आईनए कियामत
(अल्लामा हसन रज़ा ख़ां
वरेलवी)
सुन्नी कुइज़ अइम्मए अरवआ